08.04.19

पाठ - 1
उपनिषद् - वाक्यानि

ईशावास्यमिदं सर्वं यत् किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्यस्विद् धनम्॥
इस संसार में जो कुछ चराचर है वह सभी ईश्वर द्वारा अवतरित है और ईश्वर सब में व्याप्त है, ऐसा सोचकर आज का त्याग करने के बाद उपभोग करो, धन छीनने की इच्छा मत करो।

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।
बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च॥
इस आत्मा को तुम रथी अर्थात् रथ का स्वामी समझो और शरीर को उसका रथ समझो, बुद्धि को सारथी और मन को लगाम समझो।

सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः।.... सत्यान्न प्रमदितव्यम्। धर्मान्न प्रमदितव्यम्.... मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव। यान्यनवद्यानि कर्माणि, तानि सेवितव्यानि। नो इतराणि
सच बोलो। धर्म पर चलो। धर्म का आचरण करो। अध्यात्म के प्रति असावधान रहो। सत्य के प्रति असावधान रहो। धर्म के प्रति असावधान रहो क्योंकि माँ देवता स्वरूप है, पिता देवता स्वरूप है, गुरू देवता स्वरूप है और अतिथि देवता स्वरूप है उनकी सेवा करो और दूसरों काम करने की इच्छा मत करो।

स होवाच (याज्ञवल्क्यः) - न वा अरे पुत्राणां कामाय पुत्राः प्रिया भवन्ति, आत्मनस्तु कामाय पुत्राः प्रिया भवन्ति। न वा अरे वित्तस्य कामाय वित्तं प्रियं

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

Date:
Page:

भवति, आत्मनस्तु कामाय वित्तं प्रियं भवति।
न किसी की पत्नी प्रिय होती है न किसी का पुत्र प्रिय होता है अपने स्वार्थ के लिए पुत्र प्रिय होता है और पत्नी प्रिय होती है और अपने स्वार्थ के लिए धन प्रिय होता है। और सब कुछ अपनी आत्म सतुष्टी के लिए प्रिय होता है।

एको देव: सर्वभूतेषु गुढ:
सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा।
कर्माध्यक्ष सर्वभूताधिवास:
साक्षी चेता केवली निर्गुणश्च ॥
एक देवता सभी प्राणियों में व्याप्त है जो सभी में अन्तर आत्मा में वास करती है, ईश्वर सर्वव्यापी है सभी कर्मों को प्रेरित करने वाला, एक जगह देखने वाला सब जगह रहने वाला और चेतना देने वाला एक ईश्वर ही है।

शब्दार्थ –

ईशावास्यम्	ईश्वर के द्वारा व्याप्त
जगत	जड़- चेतन के रूप में संसार
भुञ्जीथा:	भोग करो
मा	मत, नहीं
गृध:	लोभ करो
कस्यस्विद्	किसी का
विद्धि	जानो, समझो
सारथि:	रथ चलानेवाला
प्रग्रह:	लगाम
प्रमद:	प्रमाद करो
प्रमदितव्यम्	असावधान रहे
मातृदेव:	माता को देवता समझने वाला
अनवद्यानि	दोष- रहित

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

इतराणि	दूसरे
अरे	सम्बोधन का शब्द
वित्तम्	धनम्
आत्मन:	आत्मा का
कामाय	स्वार्थ के लिए
भूतेषु	प्राणियों में
गुढ:	छिपा हुआ
सर्वव्यापी	सबमें व्याप्त
अन्तरआत्मा	भीतर का आत्मा
कर्माध्यक्ष:	सभी कामों को प्रेरित करने वाला
अधिवास:	रहनेवाला
साक्षी	देखनेवाला
चेता	चेतना देने वाला
केवल:	शुद्ध

अभ्यास:

i. एकपदेन उत्तरत ।

क) कं रथिनं विद्धि?
= आत्मानं ।

ख) तमेव भान्तम् किम् अनुभाति?
= सर्वम ।

ग) कीदृशानि कर्माणि सेवितव्यानि?
= अनवद्यानि ।

घ) क: एक: सर्वभूतेषु गुढ:?
= देव: ।

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

Date: / /
Page:

२. पूर्णवाक्येन उत्तराणि लिखत।

क) किं सर्वम् ईश्वावास्यम?
= यत किञ्च जगत्यां जगत ईशावास्यमिदं सर्वं।

ख) किं विजिज्ञासितव्यम् ?
= सुखम् विजिज्ञासितव्यम्।

ग) कस्मात् कस्मात् न प्रमदितव्यम् ?
= स्वाध्याय सत्यात् धर्मात् च न प्रम दितव्यम्।

घ) तत्र किं कि न भाति ?
= तत्र सूर्य: चन्द्र तारकम् विधुत अग्नि किमपि न भाति।

3. प्रश्ननिर्माणं पूरयत।

क) तस्य भासा सर्वमिदम् विभाति? (किम् | के | कानि)
प्रश्न- तस्य भासा किम् विभाति?

ख) पुत्राणां कामाय पुत्रा: प्रिया भवन्ति। (कस्य | कासाम | केषाम्)
प्रश्न- केषाम् कामाय पुत्रा: प्रिया: भवन्ति ?

ग) बुद्धिं तु सारथिं विद्धि? (कस् | काम् | किम्)
प्रश्न- काम तु सारथिं विद्धि?

घ) यदा वै सुखं लभतेऽथ करोति। (क: | किम् | का)
प्रश्न यदा वै किम् लभतेऽथ करोति।

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

4. रिक्तस्थानानि समुचितपदैः पूरयत।

क) मा गृधः कस्यस्विद् धनम्।

ख) आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरम् रथमेव तु।

ग) सुखमेव लब्धवा करोति ।

घ) कर्माध्यक्षः सर्वभूताधिवाससाक्षी चेता केवलो निर्गुणश्च।

ङ) सत्यात् प्रमादः न करणीयः।

च) धर्मात् प्रमदः न कर्तव्यः।

5. सन्धिं वा पूरयत।

क) किम्+च - किञ्च

ख) कुतः + अयत् - कुतोऽयम्

ग) सत्यात् + न - सत्यान्न

घ) यानि+ अनवद्यानि - यान्यनवद्यानि

ङ) तु+ एव - त्वेव

च) निर्गुणः+च - निर्गुणश्च